क्या अल-मसीह

मुरदों में से

ज़िंदा हुए?

क्या अल-मसीह

मुर्दों में से

ज़िंदा हुए?

kyā almasīh murdoṅ meṅ se zinda hue?

Was al-Masih raised from the dead?
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

आजकल कुछ लोग हज़रत ईसा के मुर्दों में से ज़िंदा होने पर शक करते हैं। बाज़ कहते हैं कि आपको सलीब पर नहीं चढ़ाया गया बल्कि आपकी जगह किसी और को मसलूब किया गया था। लिहाज़ा चूँकि आप मरे नहीं इसलिए आपके ज़िंदा होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। चंद कहते हैं कि बिलाशुबा आप मसलूब हुए, लेकिन सलीब पर मरे नहीं बल्कि सिर्फ़ बेहोश हो गए थे और फिर सेहतयाब होकर 120 साल की उम्र में वफ़ात पाई। कुछ और को यक़ीन है कि आप मसलूब हुए, लेकिन वह आपके दुबारा ज़िंदा होने को नहीं मानते।

हुज़ूर की सलीबी मौत यक़ीनी है

पहला सवाल यह है कि हम हज़रत ईसा की मौत के बारे में क्या जानते हैं?

हुज़ूर को पहले से मौत का इल्म था

इंजील जलील में हम पढ़ते हैं,

> उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने लगा, "लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर क़ौम के बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।"
>
> (इंजील जलील, मत्ती 16:21)

हुज़ूर ने अपनी मरज़ी से अपनी जान दी

जब हुज़ूर को गिरिफ़्तार किया गया तो आपने फ़रमाया कि

> क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ?
>
> (इंजील जलील, मत्ती 26:53)

> मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। ...कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ।
>
> (इंजील जलील, यूहन्ना 10:15,18)

तशरीफ़ लाने का मक़सद फ़िद्या देना था

हुज़ूर अल-मसीह ने ख़ुद अपने बारे में फ़रमाया,

> इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों को छुड़वाए। (इंजील जलील, मत्ती 20:28)

चार मुत्तफ़िक़ गवाहों की तसदीक़

चार आदमियों ने ख़ुदा के इलहाम से हुज़ूर के हालाते-ज़िंदगी को मुख़तसरन क़लमबंद किया और चारों आपकी सलीबी मौत की तसदीक़ करते हैं। इन बयानात में जो हज़रत मत्ती, हज़रत मरक़ुस, हज़रत लूक़ा और हज़रत यूहन्ना की मारिफ़त लिखे गए हम यह पढ़ते हैं कि आप कहाँ मसलूब हुए, आपने सलीब पर से क्या फ़रमाया, आप सलीब पर कितने घंटे रहे, रोमी गवर्नर को कैसे इल्म हुआ कि आप दम तोड़ चुके हैं वग़ैरा वग़ैरा।

हुज़ूर का दुबारा ज़िंदा होना यक़ीनी है

दूसरा सवाल यह है कि क्या हुज़ूर मुर्दों में से ज़िंदा हुए कि नहीं?

हुज़ूर की अपनी पेशगोई

हुज़ूर अल-मसीह ने अपने ज़िंदा होने के बारे में ख़ुद पेशगोई करके फ़रमाया,

> लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।
>
> (इंजील जलील, लूक़ा 9:22)

पहले फ़रिश्तों का एलान

जब चंद ख़वातीन मसीह के कफ़न दफ़न के तीसरे दिन आपके मुबारक जिस्म पर इत्र लगाने आपकी क़ब्र पर गईं तो क़ब्र[1] ख़ाली थी। सिर्फ़ कफ़न ही रह गया था। वहाँ मौजूद एक फ़रिश्ते ने उनसे फ़रमाया,

> मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। वह यहाँ नहीं है। वह जी

[1]हुज़ूर की क़ब्र दरअसल एक ग़ार थी जिस में आपकी लाश को रखा गया था। उस ज़माने में मुर्दों को इसी तरह दफ़न किया जाता था।

> उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ वह पड़ा था।
> (इंजील जलील, मत्ती 28:5-6)

मुख़तलिफ़ लोगों से मुलाक़ात

लेकिन क्या ज़िंदा होने के बाद किसी से आपकी मुलाक़ात भी हुई? इंजील जलील हमें आपके मुख़तलिफ़ लोगों और मुख़तलिफ़ मौक़ों पर ज़ाहिर होने के मुताल्लिक़ बताती है। मसलन मरियम मग्दलीनी और दूसरी दो औरतों पर, हज़रत पतरस पर, फिर तमाम शागिर्दों पर, यरूशलम के नज़दीक दो मर्दों पर वग़ैरा।

हुज़ूर जिस्मानी तौर पर ज़िंदा हुए

हुज़ूर अल-मसीह जब पहली मरतबा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुए तो वह डर गए बल्कि उन्होंने आपको कोई भूत समझा। तब आपने उनसे फ़रमाया,

> “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?” उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। उसने उसे लेकर उनके सामने ही खा लिया।
> (इंजील जलील लूक़ा 24:41-43)

अगर हुज़ूर की लाश उठाई गई होती तो

यहूदी राहनुमाओं ने रोमी क़ब्र के पहरेदारों को रिश्वत देकर उन्हें बताया,

> तुमको कहना है, ‘जब हम रात के वक़्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए और उसे चुरा ले गए।’ (इंजील जलील, मत्ती 28:13)

अगर यह बात सच होती तो शागिर्द लाश ले जाते वक़्त क्यों आपका कफ़न क़ब्र ही में छोड़ जाते? और अगर मसीह अब तक मुर्दा होते तो आपके शागिर्द ज़रूर दिलशिकस्ता और ना-उम्मीद होते। इसके बरअक्स उन्होंने बड़ी दिलेरी के साथ अपने मुख़ालिफ़ीन के सामने आपके जी उठने की गवाही दी। चुनाँचे मसीह के ज़िंदा होने को झुटलाने की कोई कोशिश कभी कामयाब नहीं हुई।

इंजील जलील में हुज़ूर अल-मसीह की ज़िंदगी, मौत और ज़िंदा होने के मुताल्लिक़ मज़ीद बहुत-सी तफ़सीलात हैं। वहाँ यह भी लिखा है कि हुज़ूर ने अपने ज़िंदा होने के चालीस दिन बाद सऊद फ़रमाया। आप वहाँ उस वक़्त तक रहेंगे जब तक कि आप अपने वादे के मुताबिक़ दुबारा ज़मीन पर तशरीफ़ न लाएँ।

मरने और दुबारा ज़िंदा होने का मक़सद

लेकिन हुज़ूर अल-मसीह क्यों मसलूब होकर मुए और दुबारा ज़िंदा हुए? इसका मक़सद क्या था? आपके शागिर्द हज़रत पतरस ने इस अहम सवाल का जवाब इन अलफ़ाज़ में दिया है,

> मसीह ने हमारे गुनाहों को मिटाने की ख़ातिर एक बार सदा के लिए मौत सही। हाँ, जो रास्तबाज़ है उसने यह नारास्तों के लिए किया ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए।
> (इंजील जलील, 1 पतरस 3:18)

इस आयत से हम तीन अज़ीम सच्चाइयाँ निकाल सकते हैं,

- हम गुनाहगार हैं। नतीजे में हम हक़ तआला से दूर और अबदी मौत के हक़दार हैं।
- हुज़ूर ने हमारे गुनाहों के एवज़ हमारी सज़ा को ख़ुद उठा लिया।
- अब हम आपकी मौत और ज़िंदा होने के बाइस अल्लाह तआला से रिफ़ाक़त रख सकते हैं।

हम अपने आपको नहीं बचा सकते। हमें नजातदहिन्दे की ज़रूरत है। ख़ुशख़बरी यह है कि आप ही वह अज़ीम नजातदहिंदा हैं जिन्हें

हक़ तआला ने हमें हमारे गुनाहों और अबदी हलाकत से बचाने के लिए भेजा। हज़रत पतरस फ़रमाते हैं,

> किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें। (इंजील जलील, आमाल 4:12)

नजात कैसे हासिल करें?

अब हम यह नजात कैसे हासिल कर सकते हैं? इंजील जलील फ़रमाती है,

> ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।
>
> (इंजील जलील, आमाल 16:31)

आमीन!